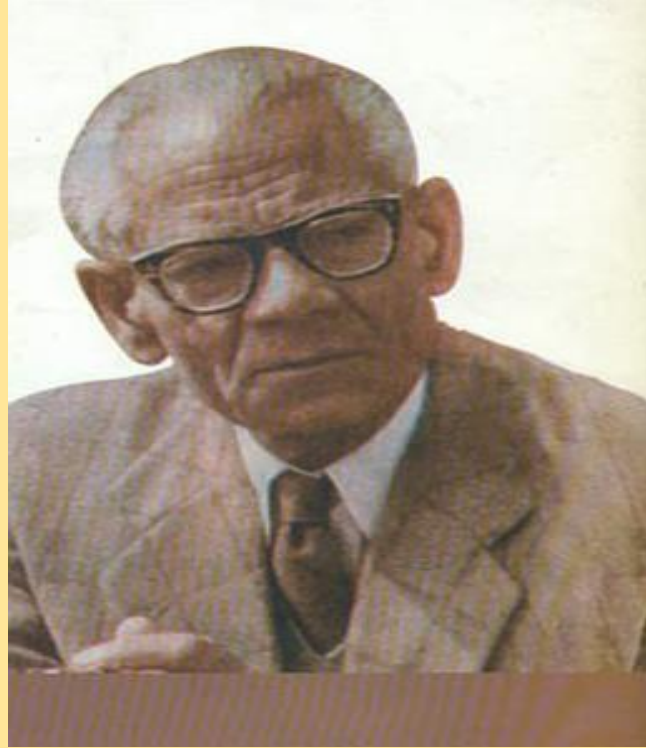


दुख का अधिकार

-यशपाल



लेखक परिचय



यशपाल यशपाल का जन्म फिरोजपुर छावनी में सन 1930 में हुआ। उन्होंने आरंभिक शिक्षा स्थानीय स्कूल में और शिक्षण लाहौर में पूरी की। यह विद्यार्थी काल से ही क्रांतिकारी गतिविधियों में जुट गए थे। अमर शहीद भगत सिंह आदि के साथ मिलकर इन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में भी भाग लिया। 1976 में इनका देहांत हो गया।



पोशाक समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्जा निश्चित करती है। हम जब झुककर निचले श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं तो यह पोशाक ही बंधन और अड़चन बन जाती है। बाजार में खरबूजे बेचने आई एक औरत कपड़े में मुंह छिपाए सिर को घुटनों पर रख कर रो रही थी। पड़ोस के लोग उसे घृणा की नजरों से देखते हैं और उसे बुरा भला कहते हैं। पास पड़ोस की दुकानों से पूछने पर पता चला कि उसका 23 बरस का लड़का परसों सुबह सांप के डसने से मृत्यु को प्राप्त हो गया। अब घर में कुछ नहीं था। जब उसे सब उसे विदा करने में चला गया घर में उसकी बहू और पोते भूख से बिलबिला रहे थे।



इसलिए वह बेबस होकर खरबूजे बेचने आई थी ताकि उन्हें कुछ खिला सके परंतु सब उसकी निंदा कर रहे थे। किसी को उसके दुख से कोई मतलब नहीं था। वह क्यों रो रही है। लेखक ने उसके दुख की तुलना अपने पड़ोस की एक संभ्रांत महिला के दुख से की जिस के दुख से शहर भर के लोगों के मन से पुत्र शोक से द्रवित हो उठे थे। लेखक सोचता जा रहा था कि क्या दुख मनाने का भी एक अधिकार होता है। उसके लिए भी सहूलियत चाहिए। दुखी होने का भी एक अधिकार होता है जो शायद गरीबों को नहीं है



दुःख का अधिकार

लेखक यशपाल

धन्यवाद